

**Era University, Lucknow**  
**The Creative Arts Club**  
**Online Poetry Competition 2020 “Survival during Covid”**  
**Final Judgement**

**Faculty Coordinators of Poetry Club**

1. Dr. Rupali Mirza
2. Dr. Priyanka Ghosh

**Judges of Poetry Competition**

1. Dr. Sheeba Rizvi
2. Ms. Hansa Johari

**Winner: Ananya Peter, B.Sc. Nursing, 1<sup>st</sup> Year**

*Ananya Peter is a melophile and an aesthete, who grew up in Mainpuri, a city of Uttar Pradesh. She started writing while she was in high school which was appreciated by her teachers and peer. Currently, she is studying B.Sc Nursing at the Era University, Lucknow. She shares her passion of singing and poetry through her Instagram page. She has written many songs and poems on teenager's life, gender equality and college life.*



**Survival During Covid**

Our fingers are all crossed as we all hope for a cure.  
A cure to end the pandemic of covid-19,  
Which has killed a many like Ebola did in twenty fourteen (2014).  
Social distance is the best thing, waving hand and not shaking.  
You can touch others lovely heart by keep a distance of 6 feet apart,  
Flora and fauna unheard without social distancing,  
Masking from the micro human nest in Quarantine.  
Medicos wants isolation making word pandemic free,  
blue sky lashing with clouds water bodies are now pollution free.  
Still battling and appreciating heroes waiting for a lock free world,  
To keep yourself safe from this pandemic wear a mask and a glove.  
There is a worldwide panic and a frenzied Rush  
to discover a medicine, to combat coronavirus.  
It is deadly because, like fire it spreads very fast,  
symptoms and complications might also be vast.  
Scientist believe it has come from snakes or bats,

for once the culprits are not the infamous rats.  
Our compassions cannot travel beyond the walls of our room,  
We are now left to succumb to the limitation  
Set by W.H.O to stop the Doom.  
So our fingers are all crossed as we all hope for a cure  
And to make things get back as it used to be like before.....

\*\*\*\*\*

### **कोविड-19 के दौरान बचाव**

आज सारा संसार इतना चकित क्यों है  
करोना इतना जटिल क्यों है ,  
अमेरिका इटली हो या चाइना, करोना सबको दिखा रहा है एक आईना ,  
करोना के आगे सब घुटने टेक रहे हैं ,आंखों के सामने अपनों की मौत देख रहे हैं ,  
दे रहा दर्द सबको यह करोना आज मुश्किल लग रहा है उसे हराना  
आखिर कब तक लाकडॉन का यह खेल चलता रहेगा  
गरीब भूख की आग में कब तक जलता रहेगा ,  
जिंदगी थम सी गई है, किनारा नजर नहीं आता  
गली हो या मोहल्ला किसी का सहारा नजर नहीं आता ,  
खुद को खुद से कैद करने का सफर अजीब इत्तेफाक है कि...  
इसी बहाने लोग अपनों के करीब हो गए ,अमीर 'अमीर रह गए ,गरीब और गरीब हो गए  
फुटपाथ पर सोने वाला मजदूरी करने वाला बताओ आज कहां जाए  
जो रोजी-रोटी से दूर हो गए ,कहीं मौत के करीब ना होते जाएं ,  
जो जहां है वहीं रुक गया ना कोई कहीं आ' जा रहा है  
पढ़ाने को भी ऑनलाइन क्लासेस का सहारा अब लिया जा रहा है ,  
डरते हैं सब अब गले लगने से , बचते हैं एक दूसरे को छूने से  
चहल-पहल रहती थी जहां चारों ओर सब ठिकाने हो गए हैं अब वो सूने से ,  
करोना के आने से देश में मायूसी छाई है  
जैसे एक आंधी सबकी जिंदगीयों में काली घटा लाई है ,

फिर भी नहीं डरेंगे हम, इससे निपटने का इससे हर संभव प्रयास जारी है  
तुमने तो फैला लिया अपना कहर कोरोना, अब तुम्हें निपटाने की बारी आई है।  
कोरोना योद्धाओं की मेहनत और जब्बे को मैं दिल से सलाम करती हूँ  
कोई कितना भी अपमानित कर ले आपको  
आपके समर्पण को मैं शत-शत प्रणाम करती हूँ।  
संसार स्तंभ है मौन है और लाचार भी है,  
कहीं सन्नाटा तू कहीं हाहाकार भी है  
पंछी पेड़ों से पूछते हैं शहर का इंसान कहां है  
क्या हुआ जो सन्नाटा और सुनसान यहां है ,  
इंसान थोड़ा सब्र कर ...  
मेरा खुदा भी यहां है तेरा भगवान भी यहां है.....  
खेतों पर है तैयार फसल, और वो जो किसान है  
आज इस लाकडाउनलोड से वो बहुत परेशान है ,  
तुम रहो घर पर ,पर उसे खेत पर जाना है  
फसल उगाना है काटना है और तुम तक पहुंचाना है ,  
मिलकर सबको कोरोना से लड़ना है और उसको हराना है  
आखिर जिंदगियों को फिर से अपनी , हमें खुशहाल बनाना है ।

\*\*\*\*\*

### **कोविड-19 के दौरान जिंदगी**

बेईमानी लगने लगी है यह जिंदगी अब से  
हुई है लाचारगी वबा का एहसास हुआ है जब से ,  
आज मालूम हुआ उनका हाल जो थे माजूर  
अब उनका भी ख्याल करें जो है मजदूर ,  
वह भी हो चुके हैं नेस्त-ओ-नाबूद  
जो समझ रहे थे खुद को माबूद ,  
जो आजाद परिंदे थे हवाओं में

वो आज कैद है घर की दीवारों में ,  
जो लोग किया करते थे सैर-ओ-सियाहत अक्सर  
दुआ करते हैं जल्द , जहां से हो वबा बेअसर  
गमगीन है दिल जिन्होंने अजीजो को अपने खोया है  
बेबस और लाचारी में दूर से ही उनकी हालत पर दिल रोया है ,  
बिना मुफासा की मुलाकात आजकल सब कर रहे हैं  
सूरत ए हाल यह है ..  
के सलाम करते वक्त हाथ खुद-ब-खुद कमर के पीछे बढ़ रहे हैं ,  
जो घरों में कैद है वह खुद को कैदी समझ रहे हैं  
बहुत से लाचार तो अभी भी दरबदर भटक रहे हैं ,  
यूं तो हर मुल्क में जन-बा-लब कौमों की बीमारी का हाल यू हो रहा है  
सब खौफजदा है कि दुनिया पर यह कहर क्यों हो रहा है ,  
अब तो वह यारों संग महफिलों में साथ बैठकर हंसना रोना चला गया  
अरे अब तो कोई कह दे के , जहां से करोना चला गया